वालाजी रे अवगुण मारा छे अति घणा, तमे रखे मन आणो धणी।
विरहणी कहे मूने तम विना, अम ऊपर थई छे घणी।। १५ ।।

हे प्रीतम! मेरे अन्दर तो अनेक अवगुण हैं, पर तुम इन्हें मन में न रखो। विरहिणी श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मुझ पर आपके बिना बुरी बीत रही है।

वालाजी रे विनता विरहणी केम कीजिए, एवडो न कीजे रोष।
जो जीव देह मूकी चालयो, तमे त्यारे थासो निरदोष।। १६ ।।

हे वालाजी! इतना रोष न करें। अपनी अंगना को विरहिणी न बनाएं। यदि मेरा जीव शरीर छोड़कर चला गया तो क्या आप निर्दोष हो जाएंगे? (नहीं, आप गुनाहगार हो ही जाओगे)।

हवे चित आणी चरणे तेडजो, विरहणी टालो आधार।
एणे वचने इंद्रावतीने, वालो तेडी लेसे तत्काल।। १७ ।।

हे वालाजी! इस विनती को चित्त में धारण कर चरणों में बुलाओ और मेरा वियोग मिटाओ। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे इन वचनों से वालाजी तुरन्त बुला लेंगे।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ३२ ।।

।। हेमन्त रुत (कार्तिक-मगसर) ।।

राग सिंधुड़ा

रुतने आवी रे वालैया हेमनी, मेघलियो गयो पोताने घेर आप।
रुतने सीतल रे लागे मूने दोहेली, हवे मूने कां ना तेडो प्राणनाथ।। १ ।।

हे धनी! हेमन्त ऋतु आई है। बादल अपने घर चले गए। अब ठण्डी हवा मुझे कष्ट देती है। ऐसे में, हे प्राणनाथ! मुझे क्यों नहीं बुलाते?

अंबरियो ने थयो रे वालाजी निरमलो, वादलियो गयो पोताने घेर ठाम।
हजी न संभारो रे वाला तमे विरहिणी, कां न भाजो रे रुदयानी हाम।। २ ।।

आसमान निर्मल हो गया है। बादल अपने घर (ठिकाने) चले गए हैं। इसलिए हे वालाजी! तुम अपनी विरहिणी अंगना को क्यों याद नहीं करते? मेरे हृदय की चाहना क्यों नहीं मिटाते हो?

हो दरसण ने दीजे रे वालैया दया करी, आ रुत में न खमाय।
जुओने विचारी रे वालैया जीवसूं, कालजडूं मारूं मांहें कपाय।। ३ ।।

हे वालाजी! दया करके मुझे दर्शन क्यों नहीं देते? यह ऋतु मेरे से सहन नहीं होती। हे वालाजी! आप अपने जीव से (अन्दर) विचार करके तो देखो। मेरा कलेजा अन्दर ही अन्दर फट रहा है।

नैणाने तरसे रे वालाजी ने निरखवा, श्रवणा तरसे वाणी रसाल।
वाचाने तरसे रे वालाजीसूं वातडी, जाणूं करी काढूं रुदयानी झाल।। ४ ।।

हे धनी! यह आंखें आपको देखने के लिए, कान आपकी सुन्दर वाणी सुनने के लिए तथा जबान आपसे बात करने के लिए तरस रहे हैं। ऐसा करके मैं अपने हृदय की तड़प शान्त करलूं।

अंगने तरसे रे वालाजीने भेटवा, जीव तरसे जोवा मांहेली जोत।
जो पेहेलूंने जाणूं रे मोसूं थासे एवडी,तो निध हाथ आवी केम खोत।।५ ।।

वालाजी! मेरा अंग आपसे लिपटने के लिए तरस रहा है और जीव अन्दर के प्रेम के तेज की ज्योति को देखने के लिए तरस रहा है। यदि पहले जानती कि मेरे साथ ऐसा होगा, तो हाथ आयी न्यामत को नहीं गंवाती।

साथने मेली बेठो छो ज्यारे सामटा, त्यारे अम विना तमने केम सुहाय।
मूने रे मारा वालैया तम विना, पलने प्रले काल जेम थाय।।६ ।।

सुन्दरसाथ को इकट्ठा लेकर जब बैठते हो, तो मेरे बिना आपको कैसे अच्छा लगता है? मुझे तो आपके बिना एक पल भी प्रलय काल के समय के समान मालूम होता है।

अवगुण मारा रे वाला अति घणा, धणी विना केहेने कहूं मारा श्री राज।
वालाजी विना रे अंग अगनी बले, देह मांहें उपजे रे दाझ।।७ ।।

हे वालाजी! मेरे अवगुण तो बहुत हैं, पर हे मेरे धनी! आपके बिना मैं किससे कहूं? हे वालाजी! आपके बिना अंग में अग्नि जलती है, जिससे मेरे शरीर में जलन होती है।

वनने छाह्यूं रे वाला द्रुम वेलडी, सीतल धराने सीतल वाए।
सीतल जलने सीतल छांहेडी, पण मारे अंग लागे अति दाहे।।८ ।।

हे धनी! वन के अन्दर वृक्षों पर बेलें छाई हैं। धरती शीतल है, वायु शीतल है। जल शीतल तथा छाया भी शीतल है, परन्तु मेरे अंग में आग लगी है, जो मुझे जला रही है।

हो दाझने भाजो रे वाला मारा अंगनी, जेम मूने थाय करार।
सुंदर धणी रे सोहामणां, विरह न खमाए जीवना आधार।।९ ।।

हे वालाजी! मेरे अंग की जलन मिटाओ, जिससे मुझे आराम मिले। हे मेरे धनी! आप रसीले हैं, मुझसे आपका विरह सहन नहीं होता।

अण ने जाण्या रे दुख अनंत सह्या, पण जाण्यूं दुख केम खमाय।
वालाजी विना रे हवे जे घडी, ते ता जीवने कठण घणूं जाय।।१० ।।

अनजानेपन में बहुत कष्ट सहे, पर पहचान कर दुःख सहन नहीं होते? हे प्रीतम! आपके बिना अब जो घड़ी बीतती है, वह जीव को अत्यधिक दुःखदायी होती है।

विखम विरह रे वालैया आ रुतनो, ते ता सुखम थाए मले जीवन।
हवे ने कहो रे वालैया तेम करूं, जीव दुख पामे रे मन।।११ ।।

हे वालाजी! इस ऋतु का विरह बड़ा कठिन है। यह प्रीतम के मिलने पर ही सुख में बदल सकता है। हे धनी! अब जैसा आप कहो, वैसा ही मैं करूं। मेरे जीव और मन दुःखी हैं।

दीपनो मेलो रे ओछव अति भलो, जिहां सिणगार करो धणी सर्व साथ।
एणे रे समे वाला मूने तेडजो, जेम आवीने मलूं मारा प्राणनाथ।।१२ ।।

दीपावली का उत्सव अच्छा है, जिस समय सब साथ और धनीजी शृंगार करते हैं। ऐसे समय में, हे वालाजी! मुझे भी बुलाओ, जिससे आकर हे प्राणनाथ (धनी देवचन्द्रजी) मैं आपसे मिलूं।

साथने सुणो रे कहूं एक वातडी, धणी मुने देता केटलू मान।
ए सुख मांहेंथी काढी करी, करमे दीधूं ततखिण राण।। १३ ।।

हे साथजी! मेरी एक बात सुनो। मेरे धनी मुझे बहुत मान देते थे। इस सुख में से निकालकर मेरे कर्मो ने तुरन्त ही मुझे वीरान कर दिया।

रणवगडमां साथ हूं एकली, विलखूं रात ने दिन।
जो कोई मानो तो कहे इंद्रावती, रखे कोई करो भारे करम।। १४ ।।

हे साथजी! इस जंगल में रात-दिन मैं अकेली बिलख-बिलखकर रो रही हूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, यदि कोई मेरी बात मानो तो कोई खोटे कर्म नहीं करना (अहंकार नहीं करना)।

आ वस्ती वसे रे सुंदर सोहामणी, धणी बेठा नौतनपुरी मांहें।
एहज पुरी मांहें अमें रहूं, पण करमे न दिए मेलो क्यांहें।। १५ ।।

यह बस्ती बड़ी सुन्दर और सुहावनी बसी है। इसी नौतनपुरी में अपने धनी बैठे हैं। इसी पुरी में मैं भी बैठी हूं, परन्तु मेरे किए हुए कर्म मिलने नहीं देते।

अनेक विधे रे साथ हूं विलखती, पण मेलो न थाए एक खिण।
ए अचरज तमे जुओ साथजी, करम तणां रे ए छे गुण।। १६ ।।

हे साथजी! मैं अनेक तरह से बिलख-बिलखकर रो रही हूं, लेकिन एक पल के लिए भी मिलाप नहीं होता। हे सुन्दरसाथजी! यह बड़े आश्चर्य की बात देखो। यह मेरे किए कर्म का फल है।

वलीने वसेके रे वज्रलेपणा, मारा जेम करजो मा कोय।
एहज पुरी मांहें अमें रेहेता, रणवगडा जुओ केम होय।। १७ ।।

मेरे बज्रलेप जैसे कर्मों को देखो, मेरे जैसा कोई न करना, वरना एक ही नगर में हम रहते हैं फिर भी देखो मैं वीरान क्यों हो गई?

एणे सर्वे वज्रलेपणा, दुखने दीठा रे अनेक।
हवेने वालाजी रे दया करो, तो टले मारा वज्रलेप।। १८ ।।

इस बज्रलेप जैसे कर्मों के कारण मैंने अनेक दुःख देखे। हे वालाजी! अब आप कृपा करो, तो यह मेरा बज्रलेप टल जाए।

दयाने रखे तमे विसारो, इंद्रावती अलवी रे थाय।
एणे वचने वालोजी तेडसे, अंगना आवीने लाग से पाय।। १९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी दुःखी होकर कहती हैं, हे मेरे धनी! तुम दया को मत भुलाओ। इन वचनों से वालाजी अवश्य ही बुला लेंगे। मैं आपकी अंगना हूं और आकर आपके चरणों में प्रणाम करूंगी।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ५१ ।।

।। सीत रुत (मगसर–पोस) ।।

राग धनाश्री

सीत रुत पिउजी तम विना, मूने अति अलखामणी थाय।
वाए रे उतर केरो वावरो, ते तां मारे तरवारे घाय।। १ ।।

हे पियाजी! आपके बिना यह शीत ऋतु मुझे अधिक चुभने वाली (दुःखदाई) है। उत्तर की हवा चलने लगी है, जो मेरे अंग में तलवार जैसा घाव करती है।